Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 04, (सितंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 26–29

प्राकृतिक खेती: धरती माँ की संतान की वापसी

निहाल ओझा[1] एवं डॉ. प्रवीण कुमार मिश्रा[2]

[1]वरिष्ठ शोध अध्येता, किसान कौशल विकास केंद्र दी, कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर

[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी), कृषि विज्ञान केन्द्र, सिद्धार्थनगर, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – nihalojha22@gmail.com

1. भूमिका

प्रकृति के साथ सहयोग करके मानव सभ्यता का जन्म हुआ। आदिकालीन मनुष्य ने धरती को अपनी माँ मानकर उसकी गोद में बीज बोया। यही कारण है कि धरती को ''धरा'', ''भूमाता'' या ''धरती माँ'' कहा जाता था। भारतीय संस्कृति में गाय, वृक्ष, जल, वायु और मृदा की पूजा की परंपरा है।

खेती सिर्फ खाद्यान्न उत्पादन नहीं था, बल्कि एक आध्यात्मिक साधना भी थी। खेत में हल चलाने से पहले किसान ने धरती माँ से कहा, "हे धरती माँ! हम तेरा स्पर्श कर रहे हैं, हमें अन्न, जल और जीवन प्रदान कर आशीर्वाद दो।"

लेकिन हरित क्रांति और औद्योगिकीकरण के बाद खेती धीरे–धीरे कृत्रिम उर्वरक, कीटनाशकों और रासायनिक पदार्थों पर निर्भर हो गई। परिणामस्वरूप मृदा की उर्वरता कम हुई, जल प्रदूषित हुआ, किसान ऋण के बोझ तले दबने लगे और उपभोक्ताओं का स्वास्थ्य प्रभावित हुआ।

प्राकृतिक खेती इन्हीं हालात में एक नए विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। यह खेती केवल अन्न उत्पादन की प्रौद्योगिकी नहीं हैय यह धरती को माँ से फिर से जोड़ने का प्रयास है। वास्तव में, यह ''धरती माँ की संतान की वापसी'' है, जहाँ मनुष्य अपनी जड़ों की ओर लौटकर प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने का रास्ता खोजता है।

2. प्राकृतिक खेती का इतिहास

(क) प्राचीन भारत की खेती परंपरा

भारत कृषि प्रधान देश रहा है। यहाँ की खेती की जड़ें प्राचीन काल से जुड़ी हुई हैं। अथर्ववेद और ऋग्वेद में खेती का उल्लेख है। उस समय खेती में रासायनिक उर्वरक नहीं थे। किसानों ने गोबर, गोमूत्र, पत्तियों, फसल अवशेषों और जैविक खाद का उपयोग किया। खेतों में नमी को बनाए रखने के लिए पुआल बिछाने और फसल चक्र का पालन किया जाता था। 'कृषि शास्त्र' और 'वृक्षायुर्वेद' जैसे भारतीय ऋषियों ने प्राकृतिक खेती का व्यापक वर्णन किया है। आचार्य कश्यप, वराहमिहिर और पराशर ने कृषि की विधियों में जैविक तत्वों और पंचगव्यों (घी, दही, दूध, गोबर, गोमूत्र) का महत्व बताया।

(ख) औपनिवेशिक काल और बदलाव:

ब्रिटिश सरकार ने गन्ना, नील, कपास और अन्य नकदी फसलों की खेती बढ़ा दी। इससे पारंपरिक खाद्यान्न उत्पादन प्रभावित हुआ और किसान अपने प्राकृतिक तरीकों से दूर होते गए। जबकि कृषि पहले संस्कृति और जीवन का एक हिस्सा था, औपनिवेशिक नीतियों ने इसे सिर्फ पैसे कमाने का साधन बना दिया।

(ग) हरित क्रांति और रासायनिक खेती का दौरः

1960 के दशक में भारत को खाद्यान्न संकट से बचाने के लिए "हरित क्रांति" का आह्वान किया गया था। उच्च उत्पादकता वाली किस्में (ह्ल्ट), रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक और सिंचाई साधनों का बहुत अधिक उपयोग किया गया था। इससे उत्पादन बढ़ा, लेकिन इसके साथ हीकृ

- मृदा उर्वरता में कमी
- भूजल स्तर घटना
- जैव विविधता का समाप्त होना
- किसानों पर आर्थिक दबाव
- मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव भी हुए।

(घ) आधुनिक संदर्भ में प्राकृतिक खेतीः

20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जापान के वैज्ञानिक मासानुबू फुकुओका ने "Do Nothing Farming" या एक सैंडर क्रांति नामक एक प्राकृतिक खेती का सिद्धांत प्रस्तुत किया।

भारत में इस क्रांति को आगे बढ़ाने का श्रेय सुभाष पालेकर जी को जाता है, जिन्होंने ''शून्य बजट प्राकृतिक खेती'' की अवधारणा दी। पालेकर जी ने किसानों को कम खर्च में खेती करने के लिए प्राकृतिक तरीके और गाय–आधारित जैविक घोल (जीवामृत और बीजामृत) प्रदान किए।

इस तरह प्राकृतिक खेती का इतिहास भारतीय परंपरा से जुड़ा हुआ है और आज की समस्याओं का समाधान भी है।

3. हरित क्रांति और रासायनिक खेती के दुष्परिणाम

(क) हरित क्रांति की पृष्ठभूमि

1960 के दशक में भारत में खाद्यान्न संकट था। देश में भूखमरी और अकाल लगने लगा था। यही कारण था कि वैज्ञानिक एम.एस. स्वामीनाथन और अन्य विशेषज्ञों ने उच्च उत्पादकता वाली किस्में, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक और सिंचाई उपकरणों पर आधारित "हरित क्रांति" की शुरुआत की। पहले, इस क्रांति ने भारत को खाद्यान्न उत्पादन में स्वतंत्र बनाया।

समय के साथ हरित क्रांति की सफलता ने कई समस्याओं को जन्म दिया, जिनमें प्रमुख हैंः

1.मृदा की उर्वरता में कमी

- लगातार रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से मृदा के सूक्ष्मजीव नष्ट होने लगे।
- भूमि कठोर और बंजर होती गई।

2.जल संसाधनों पर दबाव

- भूजल दोहन में वृद्धि हुई।
- पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों में जल स्तर तेजी से गिरा।

3.रासायनिक प्रदूषण

- कीटनाशकों और उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग से मिट्टी और पानी प्रदूषित हुए।
- नदियों और तालाबों में यूरिया और फॉस्फेट का जमाव बढ़ने से जलीय जीवों पर खतरा उत्पन्न हुआ।

4.जैव विविधता का ह्रास

- एक ही किस्म की फसल (मोनोकल्चर) पर जोर देने से स्थानीय किस्में विलुप्त होने लगीं।
- खेतों में पेड़–पौधों और जीव–जंतुओं का संतुलन बिगड़ गया।

5. किसानों पर आर्थिक बोझ

- उर्वरक, कीटनाशक और मशीनों पर बढ़ता खर्च किसानों को कर्ज में डुबोने लगा।
- फसल का मूल्य कम मिलने से किसान आत्महत्या जैसे कदम उठाने लगे।

6.स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव

- रासायनिक अवशेष खाद्य पदार्थों में पहुँचकर कैंसर, मधुमेह और हार्ट रोग जैसी बीमारियों का कारण बने।

4. प्राकृतिक खेती के सिद्धांत और आधार

प्राकृतिक खेती एक दर्शन और एक खाद्य उत्पादन प्रणाली है। इसके मूल सिद्धांत हैं प्रकृति के साथ संतुलन, स्थानीय संसाधनों का उपयोग और कम खर्च।

(क) मूल आधार

1. जीवामृत

- गोबर, गोमूत्र, गुड़, बेसन और मिट्टी से बना तरल घोल।
- यह मृदा में सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ाकर पौधों को पोषण देता है।

2. बीजामृत

- बीजों को बोने से पहले गोबर, गोमूत्र और नीम की पत्तियों से बने घोल में उपचारित किया जाता है।
- इससे बीज रोग–मुक्त रहते हैं।

3. घनजीवामृत

- जीवामृत का ठोस रूप। इसे मिट्टी में डालने से पौधों की जड़ें मजबूत होती हैं।

4. आच्छादन

- फसल अवशेष, पुआल या पत्तियों से भूमि ढक दी जाती है।
- इससे नमी बनी रहती है और खरपतवार कम होते हैं।

5. विविध फसल प्रणाली

- एक ही खेत में कई फसलें उगाई जाती हैं।
- इससे मिट्टी का संतुलन बना रहता है और कीटों का प्रकोप घटता है।

(ख) प्राकृतिक खेती के चार स्तंभ (सुभाष पालेकर के अनुसार)

1. **बीजामृतः** बीजों का संरक्षण
2. **जीवामृतः** भूमि की उर्वरता बढ़ाना
3. **आच्छादनः** नमी और सूक्ष्मजीवों की रक्षा
4. **विविधताः** एक खेत में विभिन्न प्रकार की फसलें

(ग) दार्शनिक आधार

प्राकृतिक खेती इस विचार पर आधारित है कि :

- धरती माँ स्वयं में उर्वर है।
- किसान केवल सहायक है, मालिक नहीं।
- प्रकृति के नियमों का पालन करके ही स्थायी कृषि संभव है

5. प्राकृतिक खेती बनाम जैविक खेतीः

लेकिन ''जैविक खेती'' और ''प्राकृतिक खेती'' के बीच कुछ महत्वपूर्ण अंतर हैं, दोनों को अक्सर एक ही शब्द से समझा जाता है। जबकि दोनों का लक्ष्य रसायन–मुक्त खेती करना है, तो उनके विचार, साधन और लक्ष्य अलग हैं।

(क) जैविक खेतीः जैविक खेती का अर्थ है खेती में जैविक खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, हरी खाद और जैविक कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है, कृत्रिम हार्मोन, रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक नहीं होते।

विशेषताएँः

1. इसमें बाहरी स्रोतों से प्राप्त जैविक सामग्री (जैसे वर्मी कम्पोस्ट, नीम तेल, बायोपेस्टिसाइड) का प्रयोग किया जाता है।
2. यह कृषि बाजार आधारित है और इसके उत्पादों को ''ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन'' चाहिए।
3. प्राकृतिक खेती की तुलना में उत्पादन लागत अधिक होती है क्योंकि कई जैविक इनपुट खरीदने पड़ते हैं।
4. यह "सस्टेनेबल एग्रीकल्चर" पर जोर देता है, यानी ऐसी खेती जो लंबे समय तक टिकाऊ रहती है और पर्यावरण के लिए सुरक्षित है।

(ख) प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती पूरी तरह से स्थानीय और प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है और बाहरी इनपुट की आवश्यकता नहीं है।

विशेषताएँ

- यह केवल स्थानीय संसाधनों (गोबर, गोमूत्र, मिट्टी, फसल अवशेष) का उपयोग करता है।
- यह आच्छादन, जीवामृत, बीजामृत और घनजीवामृत जैसे तरीकों पर बल देता है।
- किसान अपने उत्पाद को "रसायन–मुक्त" के रूप में बेच सकता है, इसलिए किसी प्रमाणन की आवश्यकता नहीं है।
- यह खेती कम बजट वाली है, इसलिए किसान आत्मनिर्भर बन सकता है।

(ग) दोनों के बीच मुख्य अंतर

पहलू	जैविक खेती	प्राकृतिक खेती
इनपुट स्रोत	बाहरी जैविक इनपुट खरीदे जाते हैं (वर्मी कम्पोस्ट, बायोपेस्टिसाइड)	पूरी तरह स्थानीय संसाधनों पर आधारित (गाय का गोबर, गोमूत्र, मिट्टी)
लागत	अपेक्षाकृत अधिक	लगभग शून्य
प्रमाणन	ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन आवश्यक	कोई सर्टिफिकेशन आवश्यक नहीं
दृष्टिकोण	बाजार उन्मुख	आत्मनिर्भरता और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर आधारित
फसल प्रणाली	फसल विविधता की अनुमति, लेकिन व्यावसायिक दृष्टिकोण से मोनोकल्चर भी होता है	मिश्रित खेती, विविध फसलें, स्थानीय किस्मों को प्राथमिकता

(घ) समानताएँ

1. दोनों ही रसायन–मुक्त हैं।
2. दोनों ही मृदा की उर्वरता और पर्यावरण की रक्षा करते हैं।
3. दोनों से उत्पादित खाद्य पदार्थ स्वास्थ्यवर्धक होते हैं।

निष्कर्ष

प्राकृतिक खेती केवल एक कृषि प्रणाली नहीं हैय यह धरती पर माँ की वापसी का प्रतीक भी है। रासायनिक खेती पर निर्भर होने से धरती माता प्रदूषित होती है, उर्वरता कम होती है और मानव स्वास्थ्य को भी खतरे में डालती है। प्राकृतिक खेती हमें सिखाती है कि

- धरती में पहले से ही वह शक्ति है जो पौधों को बिना रसायन या कृत्रिम सामग्री के भी पोषण दे सकती है।
- प्रकृति के नियमों का पालन करके उत्पादन करने वाला किसान केवल एक सहायक है।
- यह खेती हमें भारतीय कृषि संस्कृति, परंपराओं और हमारी जड़ों की ओर लौटने का रास्ता दिखाती है।

प्राकृतिक खेती एक वैकल्पिक जीवन दृष्टिकोण भी देती है आज जब जलवायु परिवर्तन, मिट्टी का क्षरण, जल संकट और किसानों की आत्महत्या जैसी समस्याएं सामने हैं। यदि हम धरती माँ की संतान हैं, तो हमें उसके आंचल को बचाना चाहिए। प्राकृतिक खेती करके हम न केवल मृदा, जल और वायु को शुद्ध रख सकते हैं, बल्कि किसानों को ऋण और रसायन से बचाकर एक स्वस्थ और स्वावलंबी समाज बना सकते हैं।

इसलिए यह समय है कि हम सब मिलकर यह संकल्प लें:

- हम धरती माँ से जुड़ेंगे,
- उनके संसाधनों का सम्मान करेंगे,
- और प्राकृतिक खेती को अपनाकर आने वाली पीढ़ियों को एक सुरक्षित, स्वच्छ और स्वस्थ भविष्य देंगे।

इसी में निहित है धरती माँ की संतान की वास्तविक वापसी